: विषय-सूची :

घोषणा (DECLARATION) I

प्रमाण-पत्र (CERTIFICATE) II

सारांश III

प्राक्कथन XI

विषय सूची XVII

प्रथम अध्याय : काशीनाथ सिंह व्यक्ति और साहित्यकार 1

1.1. व्यक्ति : जीवनरेखा : कुछ तथ्य

1.1.1. जीवनरेखा : प्रकृति और प्रवृत्ति

1.2. साहित्यिक काशीनाथ सिंह : परिवेश का प्रभाव और लेखक की गढ़न

1.2.1. काशीनाथ सिंह : लेखक का अन्तर्जगत

1.2.2. काशीनाथ सिंह का साहित्य एवं लेखकीय विकास : तथ्यों के आईने में

1.3. कुछ और बातें

1.4. कथाकार का वैचारिक भूतल

द्वितीय अध्याय : समाज, साहित्य, यथार्थ और सामाजिक यथार्थ 55

2.1. समाज क्या है?

2.1.1. व्यक्ति

2.1.2. परिवार

2.1.3. आस-पड़ोस

2.1.4. जाति

2.1.5. समाज : सांस्कृतिक पक्ष

2.1.6. समाज : आर्थिक पक्ष

2.1.7. समाज : राजनीतिक पक्ष

2.2. साहित्य क्या है?

2.2.1. साहित्य का प्रयोजन

2.2.2. साहित्य के आंगोपांग
2.3. यथार्थ का तात्पर्य : कुछ परिचयात्मक एवं पारिभाषिक बातें
2.3.1. यथार्थ एवं यथार्थवाद : अन्तर्संबंध और उसके विविध चेहरे
2.3.2. सामाजिक यथार्थ क्या है?
2.3.2.1. यथार्थ के विविध चेहरे और सामाजिक यथार्थ
2.4. समाज, साहित्य, यथार्थ और सामाजिक यथार्थ के पारस्परिक अन्तर्संबंध और अन्योन्याश्रिता

तृतीय अध्याय: स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा-साहित्य के विविध आंदोलनों के सामाजिक सरोकार और कथाकार काशीनाथ सिंह 111

3.1. नई कहानी के सामाजिक सरोकार
3.2. साठोत्तरी हिन्दी कहानी का सामाजिक पक्ष
3.2.1. अकहानी और समाज
3.2.2. सचेतन कहानी में समाज का प्रतिबिंब
3.2.3. सहज कहानी की सामाजिकता
3.2.4. समांतर कहानी में सामाजिकता का मुहावरा
3.2.5. सक्रिय कहानी और हमारा समाज
3.2.6. समकालीन हिन्दी कहानी का समाज
3.3. साठोत्तर हिन्दी उपन्यासों में समाज
3.4. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में समाज का चेहरा
3.5. साठोत्तर कथा-साहित्य में सामाजिक संवेदना के आयाम और काशीनाथ सिंह का कथा-साहित्य
3.5.1. बदलते हुए संबंधों का सच
3.5.2. स्त्री-पुरुष संबंधों का नया-चेहरा
3.5.3. प्रेम का नवीन प्रतिबिंब
3.5.4. गाँव, कस्बे, नगर और औद्योगिकीकरण : परिवर्तन का संदर्भ
3.5.5. अजनबीपन और अकेलापन

3.5.6. व्यर्थताबोध का संदर्भ
3.6. समकालीन हिन्दी कथा साहित्य: सामाजिक सरोकार की दिशाएँ और काशीनाथ सिंह का समकालीन कथा-साहित्य
3.6.1. मूल्यों में विघटन की स्थितियाँ
3.6.2. पारिवारिक और सामाजिक संबंधों का सच
3.6.3. बाज़ार और व्यक्ति
3.6.4. भूमंडलीकरण का संदर्भ
3.6.5. मीडिया और आज का समय
3.6.6. समकालीन समाज के बरअक्स सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और वैचारिक ऊहापोह का संदर्भ

चतुर्थ अध्याय: काशीनाथ सिंह के कथा-साहित्य में सामाजिक यथार्थ स्वरूप 158

4.1. मध्यवर्गीय नीतियाँ और छद्म
4.2. निम्नवर्गीय जीवन की विडंबनाएँ
4.3. मानवीय संवेदनाओं का क्षरण
4.4. टूटते संबंधों का सच
4.5. प्रेम का बदलता स्वरूप
4.6. स्त्री-पुरुष के बदलते संबंध
4.7. बेरोजगारी
4.8. अकेलापन
4.9. पूंजी और बाज़ार का बढ़ता वर्चस्व
4.10. स्त्री -समस्या
4.11. दलित-जीवन का यथार्थ
4.12. प्रकृति से विलगाव
4.13. सामाजिक न्याय और सत्ता
4.14. राजनीति का विरूपित चेहरा और पूंजी
4.15. धर्म का खोखलापन और पूंजी
4.16. शिक्षा जगत में आई गिरावट और युवा-वर्ग

पंचम अध्याय: कथाकार काशीनाथ सिंह के पात्रों का सामाजिक यथार्थ के आईने में वर्गगत अध्ययन 224

5.1. काशीनाथ सिंह के पात्रों का समाज

5.2. काशीनाथ सिंह के कथा-साहित्य में पात्रों का वर्गीकरण

5.2.1. धार्मिक स्तर पर पात्रों का वर्गीकरण

5.2.2. शैक्षिक स्तर पर पात्रों का वर्गीकरण

5.2.3. राजनीतिक विचारधारा के स्तर पर पात्रों का वर्गीकरण

5.2.4. आर्थिक स्तर पर पात्रों का वर्गीकरण

5.2.5. सामाजिक स्तर पर पात्रों का वर्गीकरण

5.2.6. भाषायी स्तर पर पात्रों का वर्गीकरण

5.2.7. परिवेशगत स्तर पर पात्रों का वर्गीकरण

5.2.7.1. ग्रामीण पात्र

5.2.7.2. क़स्बाई पात्र

5.2.7.3. नागर पात्र

5.2.7.4. पात्रों के नामकरण के बरअक्स उनकी वर्गगत सच्चाइयाँ

षष्ठ अध्याय : व्यंग्य और भाषा के बरअक्स सामाजिक यथार्थ के संदर्भ में काशीनाथ सिंह का कथा-साहित्य 260

6.1. व्यंग्य क्या है?

6.1.1. व्यंग्य की अवधारणा

6.1.1.1. व्यंग्य की भारतीय अवधारणा

6.1.1.2. व्यंग्य की पाश्चात्य अवधारणा

6.2. व्यंग्य और भाषा के साथ सामाजिक यथार्थ का अन्तर्संबंध और काशीनाथ सिंह का कथा-साहित्य

उपसंहार 285

पुस्तक-सूची 296
- आधार ग्रंथ-सूची
- संदर्भ ग्रंथ-सूची
- पत्र-पत्रिकाएँ

लेखकानुक्रमणिका 317
रचनानुक्रमणिका 319
परिशिष्ट 321